

शहंशाह आलम की कविताएँ

तलघर

तुमने सूनेपन को अपना बनाते

बनाया है यह तलघर बड़े जतन से

जिसमें रहते हो अपनी पसंद के रंगों के साथ

जिसमें रहता है राग-विराग तुम्हें अपना जानते

तुम्हारे रहने का यह तरीका मेरी समझ से परे है

साथ तुम्हारे सारे रंग हैं राग और विराग भी

इस तहखाने में जिसे तुम अपना सच्चा साथी कहते हो

तुम्हारे मन में ना सही मेरे मन में बार-बार प्रश्न उठा करते हैं

कै दिन रह पाओगे सूनेपन को अपना वसंत मानते

कै दिन बिता पाओगे मेरी देह की लपट के बगैर अपनी रातें

इसलिए कि घर घर होता है तलघर तलघर होता है

मैं तो यही कहूँगा तलघर तुम्हारे रहने की जगह नहीं है

जो सिहरता रहता है अपने एकांत से अपने सूनेपन से

तुम्हारा घर है अँधेरे को मार भगाते चिड़ियों के साथ

तुम्हारा घर है मेरे आलिंगन में लिपटे बाजरे के पौधों के बीच

तुम्हारा तलघर सच नहीं है सच मेरा प्रेम है अनगिन दिनों का।

कोई है जो...

कोई है जो रोज लौटना चाहता है मेरे ख्वाब में

अजीब त्रासदी है जब शहर के शहर गिर रहे हैं

घर जंगल बनते जा रहे हैं मौत के दुःख के बुराई के

कोई है जो रहना चाहता है मेरे ख्वाब में अब भी

कौन है कैसा है जो मेरे तारीकी से अँधेरे से भरे ख्वाब में

रहना चाहता है रौशन करना चाहता है मेरे ख्वाब को

मैं जो डरा हुआ हूँ इन गिर रहे ढह रहे शहरों को देखकर

उसके लौट आने पर खुश होऊँ या गमजदा आप बताएँ



सदियों से अपने ऊपर किए जा रहे जुल्मो-सितम के बारे में आपने

कहाँ कुछ कहा है बस किसी मोजजा का किसी चमत्कार का

इंतजार करते रहे हैं अपने पेट की भूख को दबाए रोटी के लिए परेशाँ

आप क्या बताएँगे कहाँ से बताएँगे मेरे खौफ़ से निजात का रास्ता

तुम जो मेरा क़त्ल करते हो मेरी इज़्जत लेते हो बार-बार

फिर मुझे ही गुनहगार ठहराते हो हर लम्हे अपनी दलीलों से

तब भी हजार सदियों से मैं ही जिंदा हूँ तुम्हारा मुँह चिढ़ाते हुए।

●●●

तब भी कोई है जो मेरे लिए मौसम को हरा करना चाहता है

कोई है जो ओस के कतरे से मेरे सूखे होंठ गीले करना चाहता है।

### हज़ार सदियाँ

मैंने जब कभी हँसना चाहा ठट्टा मारकर

हज़ार सदियों की परेशानियाँ आकर लिपट जाती हैं

मैं कोई देवता नहीं आदमी जो ठहरा निरा बुद्धिहीन

सुना है तुम्हारे लिए बाहें फैलाती हैं देवस्त्रियाँ

समुन्दर से समुन्दर जितनी खुशियाँ भर-भरकर

मेरे लिए जेठ की धूप जितनी त्रासदी बची रह जाती है

यह मेरा रुदन है हज़ार सदियों का तुम्हारा ही दिया

### झुंड से अलग होने की कथा

पागल राजा घात लगाए बैठा है

कब उसके देश की जनता झुंड से अलग हो

कब वह झुंड से अलग हुआओं पर हमला करे

जिस तरह कोई आदमखोर हमला करता है

झुंड से अलग हुए हिरण पर हर बार

जानता हूँ खूब अच्छी तरह जानता हूँ

समझता भी हूँ खूब अच्छी तरह से कि

राजा के मन में क्या चल रहा है इन स्याह रातों में

राजा इन स्याह रातों में मेरे मारे जाने का शोकगीत नहीं

अपना आत्मगौरव खुदवा रहा है अपने शिलालेख में





हद है हद है हद है तब भी हम झुंड से अलग हो रहे  
लैं

और मारे जा रहे हैं राजा के हाथों पूरी सादगी से।

